2 जून 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित -

52वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का द्रोणगिरि में भव्य उद्घाटन

द्रोणगिरि (म.प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित 52वें श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह दिनांक 20 मई को श्री महेन्द्रकुमार जी गंगवाल जयपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

शिविर के प्रथम दिन लगभग 600 साधर्मियों की उपस्थिति में धार्मिक गाथा निलय से शोभायात्रा निकाली गई। तदुपरान्त मंगल कलश विराजमान करके समयसार महामण्डल विधान का शुभारंभ हुआ। ध्वजारोहणकर्त्ता श्रीमती सुशीला ध.प. स्व.महेन्द्रकुमारजी सर्राफ एवं श्रीमती मीना-सुनीलजी जैन सर्राफ परिवार सागर थे।

शिविर के आमंत्रणकर्ता एवं उद्घाटनकर्ता श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल व सुपुत्र राहुल-विनीत एवं सुपौत्र धार्मिक गंगवाल परिवार जयपुर थे। शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री केशवदेव जैन सुरेन्द्रकुमार जैन कानपुर, मंच उद्घाटन श्री राजकुमार-सुरेशकुमार-अखिलेश-आनंदकुमार एवं समस्त चौधरी परिवार बानपुर द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री जैनबहादुर जैन कानपुर व पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम एवं विशिष्ट अतिथि श्री भागचंदजी जैन (मंत्री-तीर्थक्षेत्र द्रोणगिरि) उपस्थित थे। साथ ही विद्वत्गणों में डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, श्री अशोकजी जैन जबलपुर, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा एवं अनेक प्रशिक्षक अध्यापक मंचासीन थे।

सर्वप्रथम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने सिद्धायतन-द्रोणगिरि में शिविर आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत कर संस्थान का परिचय दिया एवं सभी का स्वागत किया। स्वागत भाषण श्री सुनीलजी सर्राफ सागर ने दिया। श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने आधुनिक शिक्षण पद्धति के अनुसार होने वाले परिवर्तनों की जानकारी दी। अतिथियों का स्वागत श्री अशोकजी जैन जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, श्री प्रद्युम्नजी फौजदार, श्री सुनीलकुमारजी इंजी. छतरपुर आदि ट्रस्ट्रियों एवं पदाधिकारियों ने किया।

इसी अवसर पर गुरुदत्त भगवान के चित्र का अनावरण श्रीमती राजकुमारी माताश्री श्री सचिनकुमार सौरभकुमार जैन शाहगढ, आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण डॉ. दिलीप-डॉ. संध्या पंचोली, डॉ. सम्यक्-डॉ. जसकीर्ति पंचोली व पर्णिका पंचोली, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री ऋषभकुमार मनोजकुमारजी शास्त्री अभाना एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण व्या भाग्यवती ध.प.मुन्नालाल जैन एवं सुपुत्र सौरभ शास्त्री-सचिन जैन शाहगढ द्वारा संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में ''वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर'' नाम की सार्थकता बताते हुये इस शिविर का महत्व बताया।

सभा का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर ने किया। आभार प्रदर्शन श्री मुन्नालालजी जैन (मंत्री-सिद्धायतन) ने, मंगलाचरण वीतराग-विज्ञान पाठशाला की बालिकाओं ने एवं दैनिक कार्यक्रमों की रूपरेखा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने प्रस्तुत की।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

बांदा (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 6 से 10 मई तक बाल संस्कार शिविर आयोजित हुआ।

इस अवसर पर पण्डित दर्शितजी शास्त्री, पण्डित कार्तिकजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सपनजी शास्त्री द्वारा बच्चों की कक्षाएं ली गई। शिविर में अनेक बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। बच्चों ने दीपावली पर पटाखे न फोड़ने का संकल्प लिया। शिविर में युवा परिषद्, महिला मंडल एवं बालिका मंडल का विशेष सहयोग रहा।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

10

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संयम दो प्रकार का है। १. प्राणि संयम, २. इन्द्रिय संयम। छहकाय के जीवों की रक्षा प्राणिसंयम एवं पाँच इन्द्रियों व मन को वश में करना इन्द्रिय संयम है। इसे रत्न की तरह संभालने की सलाह द्यानतराय कवि ने दी है। वे कहते हैं-

''संयम रतन संभाल, विषय चोर बहुत फिरत हैं।''

पण्डित टोडरमलजी ने उक्त दोनों संयमों के पालन में होने वाली मूल बाधाओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए कहा है कि हिंसा आदि पापों में प्रमाद परिणति मूल है और इन्द्रिय विषयों में अभिलाषा मूल है, अतः इनके पालन करते समय उनसे बचने में सावधानी रखें।

प्रश्न : यदि ऐसा है तो देवताओं में संयम होना चाहिए। देवगति में संयम क्यों नहीं होता? वहाँ द्रव्य हिंसा तो है ही नहीं और पाँचों इन्द्रियों के भोग भी ऊपर-ऊपर घटते गये हैं।

समाधान : वस्तुतः संयम सम्यग्दर्शनपूर्वक आत्मा के आश्रय से उत्पन्न हुई वीतराग परिणति का नाम है, जो कम से कम दो कषाय चौकड़ी के अभाव में ही होता है अर्थात् अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ और अप्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया लोभ।

स्वर्ग में दूसरी अप्रत्याख्यानावरण चौकड़ी का अभाव नहीं होता। अतः बाह्य हिंसा व विषय न होते हुए भी संयम नहीं है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मात्र बाह्य में अहिंसक क्रियाऔर इन्द्रियों के त्याग की क्रिया कार्यकारी नहीं है। अतः सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन होना अनिवार्य है।

५. तप – तप के सम्बन्ध में भी आचार्य कुन्दकुन्द यह कहते हैं कि ''समस्त रागादि परभावों की इच्छा के त्याग द्वारा स्वस्वरूप में प्रतपन करना विजय करना तप है। इसमें अस्ति -नास्ति - दोनों कथन आ गये। अस्तित्व से स्वरूप में प्रतपन करना, लीन होना तप है और नास्ति से कहें तो ''इच्छाओं का निरोध करना तप है। अन्य आचार्यों ने कहा है-

तप के मूलतः दो भेद हैं- १.अंतरंग तप, २.बहिरंग तप। अन्तरंग तप के छह भेद हैं- १. प्रायश्चित, २. विनय, ३.वैयाव्रत, ४.स्वाध्याय, ५. व्युत्सर्ग ६. ध्यान तथा बहिरंग तप के भी छह भेद हैं-१.अनशन, २.उनोदर, ३. वृत्ति-परिसंख्यान, ४. रसपरित्याग, ५.विविक्त शैयासन और ६. काय क्लेश। ये तप मुख्यतया तो साधुओं के होते हैं, समकिती गृहस्थ भी यथा साध्य इन्हें करते ही हैं, करना भी चाहिए।

६. दान – यह अन्तिम छठवाँ आवश्यक है। दान के सम्बन्ध में आचार्य उमास्वामी ने लिखा है कि अनुग्रह अर्थात् उपकार के हेतु अपने धनादि को दूसरों को देना दान है। दान में परोपकार की भावना मुख्य रहती है। वैसे शास्त्रों में आहारदान, ज्ञानदान, औषधिदान और अभयदान की चर्चा है; परन्तु यह चर्चा साधु-संतों की मुख्यता से तथा अपने पूज्य और श्रद्धेय पुरुषों को इन चारों दानों द्वारा जीवन निर्वाह के साधन जुटाने की मुख्यता से हैं। इनके अतिरिक्त, दया दत्ति, सूमदत्ति धर्मायतन के निर्माण और जिनवाणी के प्रचार-प्रसार आदि में न्यायोपार्जित द्रव्य देना जैसे और भी दान के अनेक रूप हैं जो श्रावकों को अपने विवेक से करना ही चाहिए।

नोट – संयम, तप एवं दान की विशेष जानकारी के लिए 'धर्म के दशलक्षण' का स्वाध्याय अवश्य करें।

पुण्य और धर्म में मौलिक अन्तर

पुण्य-पाप दोऊ करम, बन्धरूप दुर मानि।
शुद्ध आत्मा जिन लह्यो, नमूं चरण हित जानि।।[१]

यद्यपि शताब्दियों से जिनवाणी के रहस्यवेत्ता पुण्य-पाप और धर्म के स्वरूप की चर्चा करते आ रहे हैं, तथापि तत्त्वज्ञान के अनभ्यास के कारण आज भी अधिकांश लोग पुण्य व धर्म में अन्तर नहीं समझते।

यद्यपि पुण्यभाव और पुण्य-क्रियायें ज्ञानी-सम्यग्दृष्टि व मुनिजनों के जीवन में भी पायी जाती हैं, किन्तु उनके पुण्य की चाह नहीं है। जब-जब ज्ञानी व मुनि अपनी वीतराग परिणति में नहीं ठहर पाते, तब-तब उनके शुभभाव

१. आचार्य पद्मप्रभमलधारिदेव : नियमसार, कलश ५९

एवं पुण्य-क्रियायें ही पायी जाती हैं, किन्तु उनको इसका हर्ष नहीं होता; बल्कि खेद वर्तता है। वे इन शुभभावों या पुण्य क्रियाओं में ही सन्तुष्ट होकर रम नहीं जाते। वे इनमें धर्म नहीं मानते। पुण्य कर्म धर्म नहीं, धर्म की सीढ़ियाँ हैं, सोपान है, जिन्हें छोड़ते हुए आत्मा में आते हैं, निज घर में प्रवेश करते हैं। अन्दर आने का मार्ग मन्दिर में से ही हैं।

जिसप्रकार सरकस में झूले पर झूलती हुई लड़की झूले से चूक जाये तो जाली पर गिरती है, किन्तु गिरकर वह हर्षित नहीं होती; अपितु खेद-खिन्न होती है। गिरना उसे कोई गौरव की बात नहीं लगती, बल्कि शर्म महसूस होती है; लेकिन जमीन पर गिरने से तो मौत ही होगी, अतः जान बचाने के लिये जाली बाँधते हैं, विश्राम करने के लिये नहीं; उसीप्रकार अपने स्वभाव के झूले से गिरें तो शुभभाव की जाली पर आते हैं; क्योंकि अशुभभाव की कठोर भूमि पर गिरना तो साधक की मौत है, अशुभभाव में तो साधुता ही खण्डित हो जाती है। ज्ञानी-सम्यग्दृष्टि के शुभाशुभ दोनों ही प्रकार के भावों का अस्तित्व है, किन्तु ज्ञानी को शुभ की चाह नहीं है। ज्ञानी के तो एकमात्र कषायरहित, शुभाशुभभावरहित अपने त्रिकाली ज्ञायकस्वभाव की व वीतरागभावरूप धर्म की भावना होती है।

पुण्य और धर्म - ये दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुयें हैं। इन दोनों के अन्तर को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं -

(१) धर्म तो आत्मा के आश्रय से उत्पन्न होता है, और शुभभाव रूप पुण्य परिणाम 'पर' के आश्रय से होता है, देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति से, तथा दया, दान और अहिंसक सदाचारी जीवन जीने से होता है।

(२)धर्म आत्मा का शुद्धभाव है और पुण्य अशुद्धभाव है।

(३) धर्म का फल मोक्ष है और पुण्य का फल संसार है।

(४) धर्म आत्मा की निर्दोष, निर्विकारी एवं निर्मल पर्याय हैं और पुण्य सदोष, विकारी पर्याय है।

(५) धर्म से आत्मा को सच्चे सुख की प्राप्ति होती है, और पुण्य से आकुलताजनक, नाशवान, क्षणिक, अनुकूल संयोग मिलते हैं, जो वियोग होने पर महादुःख के कारण बनते हैं।

(६) धर्म वीतरागभाव और पुण्य रागभाव है।

(७) पुण्य तो यह जीव अनादिकाल से करता आ रहा है, किन्तु धर्म अनादिकाल से आजतक एकसमय मात्र को भी नहीं किया।

(८) पुण्य से बाह्य जड़ लक्ष्मी (धूल) मिलती है, जबकि धर्म से अन्तरंग केवल ज्ञान लक्ष्मी प्रकट होती है।

(९) पुण्य तो विभाव है, उससे संसार परिभ्रमण नहीं मिटता - धर्म आत्मानुभूति स्वरूप सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप है, उसे मोक्षमार्ग कहो, संवर कहो, धर्म कहो, रत्नत्रय कहो अथवा आत्म-शान्ति का उपाय कहो- सब एक ही बात है। धर्म कहीं बाहर से नहीं आता, आत्मा का धर्म आत्मा में से ही प्रगट होता है।

आगम में नवतत्त्व कहे हैं। उनमें संवर और निर्जरा तत्त्वों में धर्म का समावेश होता है, किन्तु अज्ञानी जन पुण्य (आस्रव-बंध) से धर्म मानते हैं। वे पुण्य तत्त्व व संवरनिर्जरा तत्त्वों को एकमेक करते हैं, मिलाते हैं। ऐसे लोग वास्तव में नवतत्त्वों को ही नहीं समझे हैं; अतः जो धर्म करना चाहते हैं, सुखी होना चाहते हैं, उन्हें सर्वप्रथम इन नवतत्त्वों को यथार्थ समझकर पुण्य और धर्म का रहस्य एवं अन्तर समझना ही होगा।

इस पुण्य व धर्म के रहस्य को जानकर पहिचान कर आस्रव को आस्रव एवं संवर को संवर के रूप में श्रद्धान करने से ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। सप्त तत्वों के यथार्थ श्रद्धान बिना व्यवहार सम्यग्दर्शन भी नहीं होता है, अतः पुण्य-पाप का यथार्थ ज्ञान होना अति आवश्यक है।

इस संदर्भ में बनारसीदास के समयसार नाटक का निम्नांकित कथन द्रष्टव्य है, वे कहते हैं - मोक्षमार्ग में शुद्धोपयोगरूप धर्म ही उपादेय हैं -

सील तप संजम विरति दान पूजादिक,
अथवा असंजम कषाय विषैभोग है।
कोऊ सुभरूप कोऊ अशुभ स्वरूप मूल,
वस्तु के विचारत दुविध कर्मरोग है।।
ऐसी बंधपद्धति बखानी वीतराग देव,
आतम धरम मैं करम त्याग-जोग है।

भौ–जल–तरैया राग–द्वेषकौ हरैया,
महा मोखको करैया एक सुद्ध उपयोग है।।७।।

ब्रह्मचर्य, तप, संयम, व्रत, दान, पूजा आदि अथवा असंयम, कषाय, विषय–भोग आदि में कोई शुभ और कोई अशुभ हैं, यदि आत्म–स्वभावरूप धर्म की दृष्टि से देखें तो दोनों ही कर्मरूपी रोग हैं। भगवान वीतरागदेव ने दोनों को बंध की परिपाटी बतलाया है, आत्मस्वभाव की प्राप्ति में दोनों त्याज्य हैं। एक शुद्धोपयोग रूप धर्म ही संसार–समुद्र से तारनेवाला, राग–द्वेष नष्ट करनेवाला और परमपद का देने वाला है।

यहाँ ज्ञातव्य है कि राग–द्वेष–रहित वीतरागता ही धर्म है।

शिष्य प्रश्न करता है, गुरु उसके प्रश्नों का समाधान करते हैं –

शिष्य कहै स्वामी तुम करनी असुभ–सुभ,
कीनी है निषेध मेरे संसै मन मांही है।
मोख के सधैया ग्याता देसविरती मुनीस,
तिनकी अवस्था तौ निरावलंब नांही है।।
कहै गुरु करमकौ नास अनुभौ अभ्यास,
ऐसौ अवलंब उनहीकौ उन पांही है।
निरुपाधि आतम समाधि सोई सिवरूप,
और दौर धूप पुद्गल परछांही है।।८।।

शिष्य कहता है कि हे स्वामी! आपने शुभ–अशुभ क्रिया का निषेध किया सो मेरे मन में सन्देह है, क्योंकि मोक्षमार्गी ज्ञानी अणुव्रती श्रावक वा महाव्रती मुनि भी तो निरावलंब नहीं होते। वे भी तो व्रत, संयम तप आदि शुभक्रिया में करते ही हैं।

श्रीगुरु उत्तर देते हैं कि कर्म की निर्जरा अनुभव के अभ्यास से हैं, सो वे अपने ही ज्ञान में स्वात्मानुभव करते हैं, राग–द्वेष–मोह रहित निर्विकल्प आत्मध्यान ही मोक्षरूप है, इसके बिना और सब भटकना पुद्गल जनित है।

शुभक्रिया व्रत समिति आदि आस्रव ही हैं, इनसे साधु व श्रावक की कर्म–निर्जरा नहीं होती, निर्जरा तो आत्मानुभव से होती है।

मुनि एवं श्रावक की दशा में बंध और मोक्ष दोनों हैं–

मोख सरूप सदा चिनमूरति,[१]
बंधमई करतूति कही है।
जावतकाल बसै जहाँ चेतन,
तावत सो रस रीति गही है।।
आतमकौ अनुभौ जबलौं,
तबलौं सिवरूप दसा निबही है।
अंध भयौ करनी जब ठानत,
बंध विथा तब फैल रही है।।९।।

आत्मा सदैव अबंध है और क्रियाबंधमय कही है, सो जितने समय तक जीव आत्म–अनुभव में लीन रहता है तब तक अबंधदशा रहती है; परन्तु जब स्वरूप से चिगकर क्रिया में लगता है तब बंध का प्रपंच बढ़ता है।

स्वभाव का कभी अभाव नहीं होता और विभाव का प्रतिक्षण अभाव होता है, वीतरागी धर्म आत्मा का स्वभाव है, आत्मा का निर्मल परिणाम है, वह सदैव एक रूप ही रहता है उसका कभी भी पुनः विभाव रूप परिणमन नहीं होता और पुण्य आत्मा का विभाव भाव है, वह सदा एकरूप नहीं रहता, प्रतिक्षण बदलता रहता है। इस अपेक्षा भी पुण्य और पाप में मौलिक अन्तर है।

पुण्य में धर्म की भ्रान्ति होने का एक मुख्य कारण यह है कि आगम में भी कहीं–कहीं पुण्य कार्य या शुभ भावों को व्यवहार से धर्म कह दिया गया है। तथा जब जब धर्म की चर्चा चलती है तब प्रवचनकार वक्ताओं द्वारा भी पुण्य करने की प्रेरणा ही अधिक दी जाने लगती है।

दसधर्मों या धर्म के दस लक्षणों के प्रतिपादन में तो अधिकांश ऐसा होता है। दसलक्षण धर्म की पूजा में भी अधिकांश ऐसा हुआ है। **(क्रमशः)**

१. चिनमूरति = आत्मा। करतूति = शुभाशुभ विभाव परिणति। जावत काल = जितने समय तक। तावत = तब तक। निबही = रहती है। अंध = अज्ञानी। विथा (व्यथा) = दुःख।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (16)

दिन रात संसार बढाने में व्यस्त हम मुमुक्षु कैसे हो सकते हैं?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

मोक्षमार्ग की शुरुआत के लिये आवश्यक है कि ''**मोक्ष पाना अपना एकमात्र लक्ष्य होना चाहिये**'' यह शर्त हमें अत्यन्त कठोर प्रतीत हो सकती है। यह भी संभव है कि यह जानकार हममें से अधिकतम लोग अपना मोक्ष जाने का कार्यक्रम अनिश्चितकाल तक के लिये स्थगित करने का मानस बना रहे हों; यह मानकर कि ''भैया यह मोक्ष हमारे बूते की बात नहीं''।

यदि आप भी उन्हीं अनेक लोगों में से एक हैं तो मानकर चलिये कि ''**अभी नहीं तो कभी नहीं**''। पर नहीं! जरा धैर्यपूर्वक विचार करें तो आपको यह काम कठिन प्रतीत नहीं होगा?

अरे भाई! मान लीजिये कि आज व्यापार (रोजगार) हमारी (हममें से अधिकतम लोगों की) प्रथम या एकमात्र प्राथमिकता है तो क्या हम दिन 24 घंटे ही व्यापारादिक कार्यों में ही लगे रहते हैं?

नहीं न!

दिन के 24 घंटों में से हम कितने घंटे व्यापारादिक के लिये देते हैं, 8–10–12 घंटे बस। शेष समय तो तब भी हम अन्य कार्यों में ही व्यतीत करते हैं न?

इसीप्रकार वर्ष में कुल कितने दिन हम व्यापार के लिये देते हैं?

यहाँ **महत्वपूर्ण कार्य लक्ष्य निर्धारित करना है। होगा तो सब कुछ सुनिश्चित, स्वाभाविक क्रम में ही। अपनी वर्तमान भूमिका के अनुरूप ही।**

कोई कह सकता है कि यह कैसे संभव है कि मोक्ष पाने को हम अपना एकमात्र लक्ष्य बना लें, ऐसा करेंगे तो हम संसार में टिकेंगे कैसे, आखिर संसार में रहने के लिये और भी अनेकों काम करने पड़ते हैं।

मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आखिर आपको संसार में रहना ही क्यों है?

आपको तो मोक्ष जाना है न! तो यही तो मोक्ष पाने का उपाय है कि आप संसार में बने रहने के लिये अपात्र हो जाइये, बस!

यदि आपके मन में भी यही सवाल उठ रहा है तो मेरा एक बहुत बड़ा काम तो हो गया। कम से कम आपको यह बात समझ में तो आ गई कि मोक्ष का मार्ग क्या है। आखिर आपको मेरी यह बात समझ में भी आ गई और स्वीकृत भी हो गई कि **यदि हमने मोक्ष पाने को अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया तो हम संसार में नहीं टिक पायेंगे।**

अरे भोले! संसार में नहीं टिक पायेंगे तो क्या अनर्थ हो जायेगा, कहाँ जायेंगे?

सिर्फ दो ही तो स्थान हैं – एक संसार और दूसरा मोक्ष। यदि संसार में नहीं टिक पायेंगे तो मोक्ष चले जायेंगे और क्या होगा?

यही तो हमें करना है न! हमें मोक्ष ही तो जाना है!

आज हम संसार में इसलिये हैं कि हममें संसार में रहने की पात्रता है। हाँ! संसार में टिकने के लिये भी पात्रता चाहिये। जिस प्रकार आज हम जेल में इसलिये नहीं हैं क्योंकि हममें जेल में रहने की पात्रता ही नहीं है तो हमें जेल में रखेगा कौन?

यदि हमें मोक्ष जाना है, संसार में नहीं रहना है तो हमें यही तो करना होगा कि हमें संसार में टिकने की पात्रता त्यागनी होगी।

हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम स्वयं अपने अभिप्राय को ही नहीं पहिचानते हैं। हम अपने आपको ही नहीं पहिचानते हैं। हमारा व्यक्तित्व द्वि व्यक्तित्व (Double Personality) है और हमारा चित्त विभक्त (Double Mind) है। हम बातें मोक्ष की करते हैं पर हम रहना संसार में ही चाहते हैं।

यदि नहीं तो अब तो विचार करो कि हम कैसे हैं, क्या चाहते हैं और करते क्या हैं?

अभी मोक्ष तो हमारी कल्पना में समाता ही नहीं है। हमारी कल्पना अभी किसी मोक्ष का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करती है। मोक्ष का जो स्वरूप ग्रंथों में वर्णित है वह हमें मालूम ही नहीं है। कदाचित हमने वह सुन या पढ भी लिया हो तो हमें उस पर विश्वास नहीं है। यदि हम उस पर विश्वास करने के लिये विवश ही हो जाएं तब भी वह हमें अपने लिये इष्ट नहीं है, स्वीकार ही नहीं है। इसीलिये तो तुरंत ही यह प्रतिरोधी विचार हमारे चित्त में आता है कि यदि हम ऐसा करेंगे तो संसार में टिकेंगे कैसे? आज तो हालात ये हैं कि यदि हमें भ्रम भी हो जाये कि हमारा संसार में बने रहना संदिग्ध है, हमारा संसार खतरे में है, तो हम चिंतित और परेशान हो उठते हैं।

जिस तरह मोक्षमार्ग की चर्चा हमें इसप्रकार आंदोलित करती है कि ''हम संसार में टिकेंगे कैसे'' क्या कभी संसार ने हमें आंदोलित किया है कि आखिर यह संसार छूटेगा कैसे, आखिर मोक्ष मिलेगा कैसे?

ऊपरी तौर पर हम मोक्ष पाने की और मोक्ष जाने की बातें तो करते हैं पर प्रयास हम निरंतर संसार में बने रहने का ही करते हैं, संसार बढाने का ही करते हैं। हम अपनी सारी शक्ति का प्रयोग तो अपने आपको संसार में टिकने के लिये उपयुक्त बनाये रखने के लिये करते हैं। यदि हम इससे थोड़ा आगे बढते हैं तो हमारे यत्न संसार को अपने लिये उपयुक्त और अनुकूल बनाने में बर्बाद होते हैं। मोक्ष जाने के लिये तो हम करते ही क्या हैं?

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

15

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

हमारा जीवन हमारा जीवन है। इसमें किसी का हस्तक्षेप नहीं है, नहीं होना चाहिये। यदि हम शान्ति से चुपचाप कुछ करें तो हमें कोई कुछ नहीं कहता। पर जब हम अपनी किसी क्रिया को, कार्य को; भुनाने की कोशिश करते हैं; तब हजारों झँझटें खड़ी हो जाती हैं।

सल्लेखनापूर्वक मरण चुनना हमारा मूलभूत अधिकार है।

आप कह सकते हैं कि जीना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, मरना नहीं।

सल्लेखना में हम मरण के लिये प्रयास नहीं करते; अपितु अंतिम साँस तक जीने का ही प्रयास करते हैं; किन्तु जब मरण अनिवार्य हो जाता है, तब क्या हम शान्ति से मर नहीं सकते? शान्ति से जीना और शान्ति से मरना हमारा दायित्व है; जिसे हम समताभावपूर्वक निभाते हैं।

इस बात को हम अनेक बार स्पष्ट कर आये हैं कि जब मृत्यु एकदम अनिवार्य हो जावे, बचने का कोई उपाय शेष न रहे, तभी सल्लेखना ग्रहण करें।

यद्यपि यह सत्य है कि हमारी अंतरंग क्रियाओं से किसी को कुछ भी लेना-देना नहीं है; तथापि यह भी सत्य ही है कि हमारे आडम्बर किसी को स्वीकार नहीं होते। अतः आडम्बरों से बचना हमारा परम कर्त्तव्य है।

सम्पूर्ण समाज से हमारा विनम्र निवेदन है कि प्रभावना के नाम पर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा न करें; जिससे किसी को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने का मौका मिले।

जिन्होंने इसे महोत्सव कहा है; उन्होंने भी महान मुनिराजों पर आये संकटों की, उपसर्गों की चर्चा करके संकटग्रस्त संल्लेखनाधारियों को ढाँढ़स बंधाया है। अतः वहाँ उत्सव जैसी कोई बात नहीं है।

हमने सल्लेखना को कुछ इस रूप में प्रस्तुत कर दिया है कि सल्लेखना एक ऐसी क्रिया है कि जिसमें बहुत कष्ट होता है, बहुत पीड़ा होती है; पर ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। **'तो तेरे जिय कौन कष्ट है, मृत्यु महोत्सव भारी'** इस पंक्ति ने जलती आग में घी डालने का काम किया है। एक भयानक चित्र प्रस्तुत हो गया है।

समाज ने उक्त छन्दों के आधार पर चित्र बनवाकर मन्दिरों में प्रमुख स्थानों पर लगवा दिये। गीत-संगीत वाले भी कहाँ पीछे रहने वाले थे। उन्होंने इन गीतों को संगीत के साथ प्रस्तुत कर समा बाँध दिया। सब एक दिशा में ही बह गये, किसी ने भी यह प्रश्न नहीं उठाया। जो भी हो, पर अब तो इस ओर ध्यान देना ही चाहिये।

उस गीत में जिन मुनिराजों की चर्चा है, वे बस लगभग उतने ही हैं; उनसे **करोड़ों गुने मुनिराज ऐसे हैं, जिन्हें कोई कष्ट नहीं होता; क्योंकि सभी मुनिराज अत्यन्त पवित्र हृदय वाले महापुण्यशाली होते हैं, एकाध को कोई एकाध पाप का उदय आ जाता है। सल्लेखना लेनेवाले गृहस्थों की भी यही स्थिति है। किसी को कोई कष्ट नहीं होता।**

आखिर, उन्हें कष्ट हो भी क्यों? क्योंकि सभी महान धर्मात्मा और पुण्यशाली होते हैं।

पण्डित सदासुखदासजी के उद्धरण में जिन कष्टों की चर्चा की है; वे सभी को होंगे ही - ऐसा नहीं है। कभी कदाचित् किसी को हो जावें तो क्या करें - तदर्थ मार्गदर्शन दिया है।

यदि हम सावधान रहें और वात-पित्त-कफ को कुपित न होने दें तो किसी भी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होगा। शुद्ध सात्विक वृत्ति वाले मेरे पिताजी को मृत्यु के समय कोई कष्ट नहीं हुआ। सहज ही उनकी खुराक कम होती गई। अनाज पचना बन्द हो गया; पीड़ा का, भयंकर पीड़ा का कोई अहसास नहीं हुआ, वे बराबर तत्त्व चिन्तन के प्रति सजग रहे।

हमने सभी प्रकार की जाँचें करवाई, पर उन्हें कोई बीमारी थी ही नहीं। बस वे क्रमशः कृष होते गये, ठोस आहार छूटता गया, पेय पदार्थ लेते रहे। क्रमशः पेय पदार्थ भी सहज छूटते गये, मात्र पानी रहा और अन्त समय में वह भी छूट गया। व अन्त समय तक सजग रहे, तत्त्वचर्चा करते

रहे, वेदना के कोई चिह्न नहीं थे। पाँच मिनट पहले ही कुछ बेहोशी सी आई और सहज प्राण निकल गये।

यहाँ एक प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि ऐसा है तो इन उपसर्गधारी मुनिराजों की चर्चा क्यों की है; उन पुण्यवालों की चर्चा क्यों नहीं की?

लेखक के दिमाग में यह आया कि कष्ट के प्रसंगों में यह पंक्तियाँ धैर्य बंधायेगी, परन्तु उन्होंने यह नहीं सोचा कि इनसे एक भय का वातावरण भी निर्मित हो सकता है।

(क्रमशः)

नि:शुल्क साहित्य उपलब्ध

वीतरागवाणी प्रकाशक द्वारा प्रकाशित निम्न सभी हिन्दी पुस्तकें एवं पोस्टेज नि:शुल्क उपलब्ध हैं। प्राप्ति हेतु पुस्तकों की संख्या, पूरा पता (पिनकोड सहित) मोबाइल नं. पर वॉट्सएप करें- 9757393637 (वीतरागवाणी प्रकाशक), 9811393356 (अमित जैन)। **पुस्तकें –** सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका कर्मकाण्ड, सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका लब्धिसार व क्षपणासार, जैनभूगोल, जैनतत्त्व परिचय, करणानुयोग परिचय, कारण कार्य रहस्य, पंचलब्धि।

हार्दिक बधाई!

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर में आयोजित दीक्षांत समारोह में दिनांक 24 मई को सत्र 2016 में मेरिट में स्थान प्राप्त छात्र **प्रतीक जैन** पुत्र श्री अजयकुमार जैन, विदिशा को रजत पदक, राशि एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

शोक समाचार

आरोन निवासी श्री अजितकुमार जैन का दिनांक 25 मई को हृदयगति रुकने से अकस्मात देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के वरिष्ठ उपाध्याय के छात्र वैभव जैन के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

20 मई से 6 जून	**द्रोणगिरि**	**प्रशिक्षण शिविर**
7 जून से 9 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
12 से 21 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**
6 से 13 सितम्बर	**अध्यात्म स्टडी सर्किल मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
14 से 25 सितम्बर	**बेलगांव (कर्ना.)**	**दशलक्षण महापर्व**

(पृष्ठ 5 का शेष...)

यदि कदाचित अनुकूल संयोगों के अभाव और प्रतिकूल संयोगों के सद्भाव के कारण हमें यह संसार शुष्क और आकर्षणहीन दिखाई देने लगे तो संसार से विरक्त होने के स्थान पर हम संसार को संवारने के लिये उसमें रंग भरने के प्रयास करते हैं, हम अपने नीरस संसार को सरस बनाने के प्रयास करते हैं। अपने उक्त प्रयासों के अंतर्गत हम अपने लिये अधिकाधिक भोगसामग्री जुटाने और भोग भोगने का प्रयास करते हैं। **जब हमारे सारे ही प्रयत्न संसार को सजाने, संवारने, भोगने और बढाने की दिशा में सक्रिय हों तब अपनी ऐसी परिणति के रहते हम किस प्रकार अपने आपको मुमुक्षु मान बैठै हैं, हम कैसे यह भ्रम पाल सकते हैं कि हम मोक्षमार्ग में आगे बढ रहे हैं?**

सच तो यह है कि हम भ्रमपूर्ण स्थिति में हैं। हमें भ्रम को त्यागना होगा। संसार और मोक्ष के यथार्थ स्वरूप को अच्छी तरह समझकर, समझपूर्वक संसार के त्याग का और मोक्ष पाने का संकल्प लेना होगा। मोक्ष पाने को ही अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनाना होगा। यह मोक्ष की दिशा में हमारा पहला कदम होगा।

फीनिक्स और लॉस एंजिल्स में धर्मप्रभावना

अमेरिका : फीनिक्स – यहाँ दिनांक 24 से 27 मई तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा गुणस्थान एवं चार अनुयोग विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही एक दिन णमोकार महामंत्र मंडल विधान का भी आयोजन किया गया।

लॉस एंजिल्स – यहाँ दिनांक 28 से 31 मई तक डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: नित्य-नियम पूजन के अतिरिक्त दोनों समय 1.30-1.30 घंटे जिनागम के विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 12 अगस्त से मंगलवार 21 अगस्त, 2018 तक)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का **41वाँ शिक्षण शिविर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 12 अगस्त से 21 अगस्त, 2018** तक लगने जा रहा है।

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

संपर्क सूत्र – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

बाल संस्कार शिविर संपन्न

राजकोट (गुज.) : यहाँ पंचनाथ प्लॉट स्थित श्री सीमंधर दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 2 से 7 मई तक पण्डित सुनीलजी जैनापुरे के सान्निध्य में बाल संस्कार शिविर आयोजित हुआ।

इस अवसर पर पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित शुभांशुजी शास्त्री एवं पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री द्वारा बच्चों की कक्षाएं ली गई। शिविर में लगभग 150 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। विशेष बात यह रही कि लगभग 95% बच्चे अजैन थे। अनेक बच्चे जामनगर व सुरेन्द्रनगर आदि स्थानों से भी शिविर में आये।

सभी शिविरार्थियों के लिये नवनिर्मित आचार्य कुन्दकुन्द एवं आचार्य अमृतचन्द्र भवन में विशेष भक्तिमयी कक्षा का आयोजन भी किया गया, जिसमें दोनों आचार्यों के परिचय के साथ-साथ समस्त आचार्य परम्परा का ज्ञान भी कराया गया।

विश्व में जम्बूद्वीप ! अद्भुत रचना !

जयपुर (राज.) : सम्यग्ज्ञान प्रचार-प्रसार ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 13 मई 2018 को इन्द्रलोक सभागार, भट्टारक की नसिंया में जम्बूद्वीप विषय पर सेमिनार का आयोजन हुआ। इस प्रसंग पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने आधुनिक विश्व और आगमों में वर्णित विश्व संरचना को 3डी इमेजेज व एनिमेशन के माध्यम से बताते हुए जम्बूद्वीप की अद्भुत रचना को रोचक शैली में प्रस्तुत किया। उपस्थित जन समुदाय ने सेमिनार की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कार्यक्रम संयोजक पं. राजेशजी शास्त्री ने बताया कि समारोह में बिना प्रचार-प्रसार के 350 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर श्री हर्षवर्धन जैन ने तथा मंगलाचरण सा रे गा मा फेम डॉ. गौरव सौगाणी ने किया। आभार प्रदर्शन ट्रस्ट के प्रमुख श्री राहुलजी गंगवाल ने किया।

उपाध्याय कनिष्ठ का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपाध्याय कनिष्ठ (सत्र-2017-18) का कॉलेज परीक्षा परिणाम इसप्रकार रहा - **(1) यश जैन** पुत्र श्री योगेश जैन, खुरई (96.4%) कक्षा में प्रथम स्थान। **(2) अनिमेष जैन** पुत्र श्री चेतनप्रकाश भारिल्ल, राघौगढ (90.4%) कक्षा में द्वितीय स्थान। **(3) स्वस्ति सेठी** पुत्री श्री संजय सेठी, जयपुर (89.4%) कक्षा में तृतीय स्थान। कॉलेज में भी प्रथम तीन स्थानों पर ये ही विद्यार्थी रहे हैं। ज्ञातव्य है कि कुल 44 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें से 34 छात्र प्रथम श्रेणी एवं 10 छात्र द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये।

सभी विद्यार्थियों को टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें -
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें -
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com